न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥

न – नहीं; मे – मुझे; पार्थ – हे पृथापुत्र; अस्ति – है; कर्तव्यम् – नियत कार्य; त्रिषु – तीनों; लोकेषु – लोकों में; किञ्चन - कोई; न – कुछ नहीं; अनवाप्तम् – पाने के लिए; वर्ते – लगा रहता हूँ; एव –

निश्चय ही; च – भी; कर्मणि – नियत कर्मों में |

Text

हे पृथापुत्र! तीनों लोकों में मेरे लिए कोई भी कर्म नियत नहीं है, न मुझे किसी वस्तु का अभाव है और न आवश्यकता ही है | तो भी मैं नियत्कर्म करने में तत्पर रहता हूँ|

गीता भूषण टीका

यद्यपि श्रेष्ठ व्यक्ति कर्म फलों की प्रति उदासीन होता है फिर भी उसे नियत कर्म करने चाहिए जो शास्त्र अनुमोदित हों ताकि सामान्य लोगों को शिक्षा प्राप्त हो सके |

स्वयं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करके भगवान् इन तीन श्लोकों को कह रहे हैं |

मैं सर्वेश्वर भगवान् हूँ , सत्य संकल्प हूँ ,सत्य काम हूँ | मेरे लिए कोई

कर्तव्य नहीं है परन्तु अन्य लोग जो फल की आकांक्षा रखते हैं उन्हें कर्म करने ही चाहिए | मैं सभी फलों का आश्रय हूँ और परम फल मूर्ति भी हूँ परन्तु मैं कर्मों पर निर्भर नहीं करता हूँ| भगवान् इसके बाद इसको प्रदर्शित करते हैं | तीनो लोकों में जो भी फल किसी कर्म से प्राप्त होता है वह पहले ही मेरे द्वारा अलब्ध नहीं है क्योंकि वास्तविक रूप से सब कुछ मेरा ही है | फिर भी मैं नियत कर्म करता हूँ |

Purport

वैदिक साहित्य में भगवान् का वर्णन इस प्रकार हुआ है –

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम् |
पतिं पतीनां परमं परस्ताद् विदाम देवं भुवेनशमीड्यम् ||
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते |
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ||

“परमेश्वर समस्त नियन्ताओं के नियन्ता हैं और विभिन्न लोक पालकों में सबसे महान हैं | सभी उनके अधीन हैं | सारे जीवों को परमेश्वर से ही विशिष्ट शक्ति प्राप्त होती है, जीव स्वयं श्रेष्ठ नहीं है | वे सभी देवताओं द्वारा पूज्य हैं और समस्त संचालकों के भी संचालक हैं | अतः वे समस्त भौतिक नेताओं तथा नियन्ताओं से बढ़कर हैं और सबों द्वारा आराध्य हैं | उनसे बढ़कर

कोई नहीं है और वे ही समस्त कारणों के कारण हैं |”

“उनका शारीरिक स्वरूप सामान्य जीव जैसा नहीं होता | उनके शरीर तथा आत्मा में कोई अन्तर नहीं है | वे परम हैं | उनकी सारी इन्द्रियाँ दिव्य हैं | उनकी कोई भी इन्द्रिय अन्य किसी इन्द्रिय का कार्य सम्पन्न कर सकती है | अतः न तो कोई उनसे बढ़कर है, न ही उनके तुल्य है | उनकी शक्तियाँ बहुरुपिणी हैं, फलतः उनके

सारे कार्य प्राकृतिक अनुक्रम केअनुसार सम्पन्न हो जाते हैं |” (श्वेताश्वतर उपनिषद् ६.७-८) |

चूँकि भगवान् में प्रत्येक वस्तु ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहती है और पूर्ण सत्य से ओतप्रोत रहती है, अतः उनके लिए कोई कर्तव्य करने की आवश्यकता नहीं रहती | जिसे अपने कर्म का फल पाना है, उसके लिए कुछ न कुछ कर्म नियत रहता है, परन्तु जो तीनों लोकों में कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा नहीं

रखता, उसके लिए निश्चय ही कोई कर्तव्य नहीं रहता | फिर भी क्षत्रियों के नायक के रूप में भगवान् कृष्ण कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में कार्यरत हैं, क्योंकि क्षत्रियों का धर्म है कि दीन-दुखियों को आश्रय प्रदान करें | यद्यपि वे शास्त्रों के विधि-विधानों से सर्वथा ऊपर हैं, फिर भी वे ऐसा कुछ भी नहीं करते जो शास्त्रों के विरुद्ध हो |

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु
कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ
सर्वशः ॥२३॥

यदि – यदि; हि – निश्चय ही; अहम् – मैं; न – नहीं; वर्तेयम् – इस प्रकार व्यस्त रहूँ; जातु – कभी; कर्मणि – नियत कर्मों के सम्पादन में; अतन्द्रितः – सावधानी के साथ; मम – मेरा; वर्त्म – पथ; अनुवर्तन्ते – अनुगमन

करेंगे; मनुष्यः – सारे मनुष्य; पार्थ – हे पृथापुत्र; सर्वशः – सभी प्रकार से |

Text

क्योंकि यदि मैं नियत कर्मों को सावधानीपूर्वक न करूँ तो हे पार्थ! यह निश्चित है कि सारे मनुष्य मेरे पथ का ही अनुगमन करेंगे |

गीता भूषण टीका

मैं जो की सर्वेश्वर हूँ ,सर्वार्थसिद्ध हूँ और यदुकुल में अवतीर्ण हुआ हूँ तो यदि मैं कदाचित नियत कर्मों को सावधानी पूर्वक नहीं करता हूँ जो शास्त्र के द्वारा दिए जाते हैं तो मेरा उदाहरण लेकर सामान्य जन मेरे पथ का अनुसरण करेंगे क्योंकि मैं श्रेष्ठ व्यक्ति हूँ . वे कुल विहित आचरण को त्याग देंगे और इस प्रकार भ्रंश हो जायेंगे |

Purport

आध्यात्मिक जीवन की उन्नति के लिए एवं सामाजिक शान्ति में संतुलन बनाये रखने के लिए कुछ परम्परागत कुलाचार हैं जो प्रत्येक सभ्य व्यक्ति के लिए होते हैं | ऐसे विधि-विधान केवल बद्धजीवों के लिए हैं, भगवान् कृष्ण के लिए नहीं, लेकिन क्योंकि वे धर्म की स्थापना के लिए अवतरित हुए थे, अतः उन्होंने निर्दिष्ट नियमों का पालन किया |

अन्यथा, सामान्य व्यक्ति भी उन्हीं के पदचिन्हों का अनुसरण करते क्योंकि कृष्ण परम प्रमाण हैं | श्रीमद्भागवत् से यह ज्ञात होता है कि श्रीकृष्ण अपने घर में तथा बाहर गृहोस्थित धर्म का आचरण करते रहे |

उत्सीदेयुरिमे लोका

न कुर्यां कर्म चेदहम् ।

संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः

प्रजाः ॥२४॥

उत्सीदेयुः – नष्ट हो जायं ; इमे – ये सब; लोकाः – लोक; न – नहीं; कुर्याम् – करूँ; कर्म – नियत कार्य; चेत् – यदि; अहम् – मैं; संकरस्य – अवांछित संतति का; च – तथा; करता –

स्रष्टा; स्याम् – होऊँगा; उपन्याम् – विनष्ट करूँगा; इमाः – इन सब; प्रजाः– जीवों को |

Text

यदि मैं नियतकर्म न करूँ तो ये सारे लोग नष्ट हो जायं | तब मैं अवांछित जन समुदाय (वर्णसंकर) को उत्पन्न करने का कारण हो जाऊँगा और इस तरह सम्पूर्ण प्राणियों की शान्ति का विनाशक बनूँगा |

तो फिर क्या हो जायेगा ? यदि मैं सर्वेश्वर शास्त्रोक्त कर्मों को नहीं करता हूँ तो सामान्य लोग भी इन नियमों को तोड़ेंगे | वर्ण संकर उत्पन्न का दायित्व इस प्रकार मेरे ऊपर होगा क्योंकि नियमों को भंग कर दिया गया है | वर्ण संकरों की उत्पत्ति होने से मुझ प्रजापति के द्वारा सामान्य जनता को मलिन होना पड़ेगा |

श्रुतियां कहती हैं की :

एष सेतुर् विधरण एषां लोकानाम् असंभेदाय

मैं नियत करने वाला नियम हूँ जिससे सामान्य जनता मलिन नहीं हो | छान्दोग्य उपनिषद 4.4.22|

यद्यपि मैं श्रुतियों में लोकमर्यादा के आधार के रूप में जाना जाता हूँ फिर

भी मैं लोकमर्यादा को तोड़ने का कारण बन जाऊंगा |

यद्यपि भगवान् इस प्रकार शिक्षा दे रहे हैं फिर भी हम देखते हैं की भगवान् स्वतन्त्र रूप से भी कार्य करते हैं और वह अपने भक्त को प्रसन्न करने के लिए होता है |

ऐसा कर्मों को कनिष्ट व्यक्तियों को नहीं करना चाहिए क्योंकि उन्हें ऐसा करने की आज्ञा विधायक के द्वारा

प्राप्त नहीं है और उनसे अपेक्षा की जाती है की वे विधि का पालन करें |

यह श्रील शुख्देव गोस्वामी के द्वारा कहा गया है की :

ईश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित्

तेषां यत् स्व-वचो-युक्तं बुद्धिमांस् तत् समाचरेत्

भगवान् द्वारा शक्तिप्रदत्त दासों के वचन सदैव सत्य होते हैं और जब वे इन वचनों के अनुरूप कर्म करते हैं, तो वे आदर्श होते हैं। इसलिए जो बुद्धिमान है उस को चाहिए कि इनके आदेशों को पूरा करे। श्रीमद भागवतम 10.33.31

नैतत् समाचरेज् जातु मनसापि ह्य्
अनीश्वरः
विनश्यत्य् आचरन् मौढ्याद्
यथारुद्रो ’ब्धि-जं विषम्

जो महान् संयमकारी नहीं है, उसे शासन करने वाले महान् पुरुषों के आचरण की मन से भी कभी नकल नहीं करनी चाहिए। यदि कोई सामान्य व्यक्ति मूर्खतावश ऐसे आचरण की नकल करता है, तो वह उसी तरह विनष्ट हो जायेगा जिस तरह कि विष

के सागर को पीने का प्रयास करने वाला व्यक्ति। यदि वह रुद्र नहीं है, नष्ट हो जायेगा। श्रीमद भागवतम 10.33.30

Purport

वर्णसंकर अवांछित जनसमुदाय है जो सामान्य समाज की शान्ति को भंग करता है | इस सामाजिक अशान्ति को रोकने के लिए अनेक विधि-विधान हैं जिनके द्वारा स्वतः ही

जनता आध्यात्मिक प्रगति के लिए शान्त तथा सुव्यवस्थित हो जाती है | जब भगवान् कृष्ण अवतरित होते हैं तो स्वाभाविक है कि वे ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यों की प्रतिष्ठा तथा अनिवार्यता बनाये रखने के लिए इन विधि-विधानों के अनुसार आचरण करते हैं | भगवान् समस्त जीवों के पिता हैं और यदि ये जीव पथभ्रष्ट हो जाय तो अप्रत्यक्ष रूप में यह उत्तरदायित्व उन्हीं का है | अतः जब

भी विधि-विधानों का अनादर होता है, तो भगवान् स्वयं समाज को सुधारने के लिए अवतरित होते हैं | किन्तु हमें ध्यान देना होगा कि यद्यपि हमें भगवान् के पदचिन्हों का अनुसरण करना है, तो भी हम उनका अनुकरण नहीं कर सकते | अनुसरण और अनुकरण एक से नहीं होते | हम गोवर्धन पर्वत उठाकर भगवान् का अनुकरण नहीं कर सकते,, जैसा कि भगवान् ने अपने बाल्यकाल में लिया

था | ऐसा कर पाना किसी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं | हमें उनके उपदेशों का पालन करना चाहिए, किन्तु किसी भी समय हमें उनका अनुकरण नहीं करना है | श्री मद् भागवत में (१०.३३.३०-३१) इसकी पुष्टि की गई है –

नैतत्समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः विनश्यत्याचरन् मौढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥
इश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ।
तेषां यत् स्ववचोयुक्तं बद्धिमांस्तत् समाचरेत ॥

“मनुष्य को भगवान् तथा उनके द्वारा शक्तिप्रदत्त सेवकों के उपदेशों का मात्र पालन करना चाहिए | उनके उपदेश हमारे लिए अच्छे हैं और कोई

भी बुद्धिमान पुरुष बताई गई विधि से उनको कर्मान्वित करेगा | फिर भी मनुष्य को सावधान रहना चाहिए कि वह उनके कार्यों का अनुकरण न करे | उसे शिवजी के अनुकरण में विष का समुद्र नहीं पी लेना चाहिए |"

हमें सदैव इश्वरों की या सूर्य तथा चन्द्रमा की गतियों को वास्तव में नियंत्रित कर सकने वालों की स्थिति को श्रेष्ठ मानना चाहिए | ऐसी शक्ति के बिना कोई भी सर्वशक्तिमान

इश्वरों का अनुकरण नहीं कर सकता | शिवजी ने सागर तक के विष का पान कर लिया , किन्तु यदि कोई सामान्य व्यक्ति विष की एक बूंद भी पीने का यत्न करेगा तो वह मर जाएगा | शिवजी के अनेक छद्मभक्त हैं जो गाँजा तथा ऐसी ही अन्य मादक वस्तुओं का सेवन करते रहते हैं | किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि इस प्रकार शिवजी का अनुकरण करके वे अपनी मृत्यु को निकट बुला रहे हैं |

इसी प्रकार भगवान् कृष्ण के भी अनेक छद्मभक्त हैं जो भगवान् की रासलीला या प्रेमनृत्य का अनुकरण करना चाहते हैं, किन्तु भूल जाते हैं कि वे गोवर्धन पर्वत को धारण नहीं कर सकते | अतः सबसे अच्छा तो यही होगा कि लोग शक्तिमान का अनुकरण न करके केवल उनके उपदेशों का पालन करें | न ही बिना योग्यता के किसी को उनका स्थान ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए |

ऐसे अनेक ईश्वर के “अवतार” हैं जिनमे भगवान् की शक्ति नहीं होती |